











# विचार मंथन

# युवा भारतीय महिलाओं की उम्रती आकांक्षाएँ

स्वयं सहायता समूह और ग्राम सभा आ में युवा महिलाएं शासन में महिलाओं के भूमिका पर पारंपरिक विचारों को छुनौती दे रही हैं। केरल कुटुम्बश्री मिशन महिला-नेतृत्व वाले शासन को बढ़ावा देता है, जिसने राज्यों में इसी तरह देंगों को प्रेरित किया है। भारतीय महिलाएँ ऊर्जा से लबरेज, दूरदर्शिता, जीवन उत्साह और प्रतिबद्धता के साथ सभी युनौतियों का सामना करने में सक्षम हैं। भारत के प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता दर्वीशनाथ टैगोर के शब्दों में, हमारे लिए महिलाएँ न केवल घर की दैशनी हैं, बल्कि इस दैशनी की लौ भी हैं। अनारोक काल से ही महिलाएँ मानवता की प्रेरणा का खोत रही हैं।



प्रियका सारन  
लेखक

भारतीय महिलाओं की आकांक्षाओं में एक परिवर्तनकारी बदलाव देखा गया है, जो उनकी बढ़ती स्वायत्तता, शिक्षा और कार्यबल में भागीदारी को दर्शाता है। यह विकास भारत के सामाजिक परिहश्य को महत्वपूर्ण रूप से पुनर्परिभाषित कर रहा है। उच्च शिक्षा और कौशल विकास में लड़कियों की अब लड़कों के बाबाबर शैक्षिक उपलब्धि है, जिसमें 50 फीसदी से अधिक युवा महिलाएँ कक्षा 12 पूरी कर रही हैं और 26 फीसदी कॉलेज की डिग्री प्राप्त कर रही हैं। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण (2017-18) उच्च शिक्षा में महिलाओं के बढ़ते नामांकन पर प्रकाश डालता है, जिसमें महिला सकल नामांकन अनुपात 27.3 फीसदी तक पहुँच गया है। युवा महिलाएँ विभिन्न कैरियर पथों और डिजिटल कौशल प्लेटफॉर्म तक पहुँच से प्रभावित होकर पेशेवर महत्वाकांक्षाओं को तेजी से प्राथमिकता दे रही हैं। स्किल इंडिया मिशन और स्टेम फॉर्म गर्ल्स इंडिया जैसे कार्यक्रमों ने जैसे-जैसे अधिक महिलाएँ करियर बना रही हैं, घरों में पारंपरिक लैंगिक अपेक्षाएँ बदल रही हैं। मनरेगा पुरुष और महिलाओं के लिए समावेतन प्रदान करता है, जो ग्रामीण घरेलू गतिशीलता को प्रभावित करता है। अधिक शिक्षा और आगे के साथ, युवा महिलाओं का अधिकारिक विकास के वित्तीय और सामाजिक निर्णयों में अधिक प्रभाव है। स्वसंहायता समूहों ने ग्रामीण महिलाओं को सामूहिक रूप से घरेलू विकास का प्रबंधन करने के लिए सशक्त बनाया है। बाद में विवाह करने और साथी चुनने में सक्रिय भागीदारी वाले और बदलाव ने अरेंज मैरिज के पारंपरिक संरचनाओं को चुनौती दी है। बाल विवाह में कमी और बाद में विवाह करने को प्राथमिकता देने वाले रिपोर्ट करता है। बढ़ती स्वतंत्रता सामाजिक प्रतिबंधों को चुनौती देती है। ग्रामीण महिलाओं के बीच स्वयं सहायता समूह सदस्यता 2012 में 10 फीसदी से बढ़कर 2022 में 18 फीसदी हो गई। ये आकांक्षाएँ पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं

A woman and a young girl are smiling and taking a selfie. The woman has her face painted with the colors of the Indian flag (orange, white, and green) and a blue eye-like design above her right eye. The young girl next to her also has her face painted with the Indian flag colors and the word "INDIA" written across her forehead. They are both holding up a smartphone to take the photo.

महिलाएँ पेशेवर सेटिंग्स में लैंगिक समानता के बारे में तेजी से मुखर हो रही हैं, कानूनी और सामाजिक सुधारों को बढ़ावा दे रही हैं। पोष अधिनियम (कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न की रोकथाम), 2013 ने महिलाओं को कार्यस्थल के मुद्दों को प्रभावी ढंग से सम्बोधित करने के लिए सशक्त बनाया है। स्वयं सहायता समूह और ग्राम सभाओं में युवा महिलाएँ शासन में महिलाओं की भूमिका पर पारंपरिक विचारों को चुनावी दे रही हैं। केरल कुटुम्बश्री मिशन महिला-नेतृत्व वाले शासन को बढ़ावा देता है, जिसने राज्यों में इसी तरह के मॉडल को प्रेरित किया है। भारतीय महिलाएँ ऊर्जा से लबरेज, दूरदर्शिता, जीवन्त उत्साह और प्रतिबद्धता के साथ सभी चुनावियों का सामना करने में सक्षम हैं। भारत के प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर के शब्दों में, हमारे लिए महिलाएँ न केवल घर की रोशनी हैं, बल्कि इस रौशनी की लौ भी हैं। अनादि काल से ही महिलाएँ मानवता की प्रेरणा का स्रोत से लेकर भारत की पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले तक, महिलाओं ने बड़े पैमाने पर समाज में बदलाव के बड़े उदाहरण स्थापित किए हैं। 2030 तक पृथ्वी को मानवता के लिए स्वर्ग समान जगह बनाने के लिए भारत सतत विकास लक्ष्यों की ओर तेजी से बढ़ चला है। लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण करना सतत विकास लक्ष्यों में एक प्रमुखता है। वर्तमान में प्रबंधन, पर्यावरण संरक्षण, समावेशी आर्थिक और सामाजिक विकास जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए विशेष ध्यान दिया गया है। महिलाओं में जन्मजात नेतृत्व गुण समाज के लिए संपत्ति हैं। प्रसिद्ध अमेरिकी धार्मिक नेता ब्रिघम यंग ने ठीक ही कहा है कि जब आप एक आदमी को शिक्षित करते हैं, तो आप एक आदमी को शिक्षित करते हैं। जब आप एक महिला को शिक्षित करते हैं तो आप एक पीढ़ी को शिक्षित करते हैं। स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के माध्यम से महिलाएँ हैं बल्कि हमारी अर्थव्यवस्था की मजबूती में को भी योगदान दे रही है। सरकार के निरन्तर लगातार आर्थिक सहयोग से आत्मनिर्भर भारत के संकल्प में उनकी भागीदारी दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। पिछले 6-7 वर्षों में महिला स्वयं सहायता समूहों का अधियान और तेज हुआ है। आज देश भर में 70 लाख स्वयं सहायता समूह हैं। महिलाओं के पराक्रम को समझने की जरूरत है, जो हमें महिला की अधिक ऊंचाइयों तक पहुँचाएगी। आइए हम उन्हें आगे बढ़ने और फलने-फूलने में मदद करें। महिलाओं के सर्वांगीण सशक्तिकरण के लिए ह्याअमृत कालह इन्हें समर्पित हो। युवा भारतीय महिलाओं की उभरती आकांक्षाएँ भारत के सामाजिक तानेबाने को उत्तरोत्तर रूप से परिभाषित कर रही हैं, एक ऐसे समाज को बढ़ावा दे रही हैं जहाँ लैंगिक समानता और महिलाओं की एजेंसी आदर्श बन गई है। सहायक नीतियों को सुनिश्चित करने से इस बदलाव में तेजी आ सकती है, जिससे समावेशी

१०

की भागीदारी को बढ़ावा दिया है। विवाह की औसत आयु 2005 में 18.3 वर्ष से बढ़कर 2021 में 22 वर्ष हो गई है, जिसमें अधिक युवा महिलाएँ अनुकूलता के आधार पर साथी चुनती हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार 52 फीसदी महिलाओं ने साथी चयन में अपनी बात रखी, जो 2012 में 42 फीसदी थी। कई युवा महिलाएँ अर्थिक स्वतंत्रता के लिए प्रयास कर रही हैं, विशेष रूप से उद्यमिता के माध्यम से, क्योंकि सरकार महिलाओं के नेटवर्क स्टार्टअप के लिए समर्थन दे रही है। उदाहरण के लिए: नीति आयोग द्वारा महिला उद्यमिता मंच ने 10,000 से अधिक महिला उद्यमियों के नेटवर्क को बढ़ावा दिया है। युवा महिलाएँ स्वयं सहायता समूहों और स्थानीय शासन में बढ़ती भागीदारी के साथ राजनीतिक रूप से अधिक सक्रिय हैं। ग्रामीण महिलाओं के बीच स्वयं सहायता समूह सदस्यता 2012 में 10 फीसदी से बढ़कर 2022 में 18 फीसदी हो गई। ये आकांक्षाएँ पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं

महिलाएँ पेशेवर सेटिंग्स में लैंगिक समानता के बारे में तेजी से मुखर हो रही हैं, कानूनी और सामाजिक सुधारों को बढ़ावा दे रही हैं। पोष अधिनियम (कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न की रोकथाम), 2013 ने महिलाओं को कार्यस्थल के मुद्दों को प्रभावी ढंग से सम्बोधित करने के लिए सशक्त बनाया है। स्वयं सहायता समूह और ग्राम सभाओं में युवा महिलाएँ शासन में महिलाओं की भूमिका पर पारंपरिक विचारों को चुनावी दे रही हैं। केरल कुटुम्बश्री मिशन महिला-नेतृत्व वाले शासन को बढ़ावा देता है, जिसने राज्यों में इसी तरह के मॉडल को प्रेरित किया है। भारतीय महिलाएँ ऊर्जा से लबरेज, दूरदर्शिता, जीवन्त उत्साह और प्रतिबद्धता के साथ सभी चुनावियों का सामना करने में सक्षम हैं। भारत के प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर के शब्दों में, हमारे लिए महिलाएँ न केवल घर की रोशनी हैं, बल्कि इस रौशनी की लौ भी हैं। अनादि काल से ही महिलाएँ मानवता की प्रेरणा का स्रोत से लेकर भारत की पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले तक, महिलाओं ने बड़े पैमाने पर समाज में बदलाव के बड़े उदाहरण स्थापित किए हैं। 2030 तक पृथ्वी को मानवता के लिए स्वर्ग समान जगह बनाने के लिए भारत सतत विकास लक्ष्यों की ओर तेजी से बढ़ चला है। लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण करना सतत विकास लक्ष्यों में एक प्रमुखता है। वर्तमान में प्रबंधन, पर्यावरण संरक्षण, समावेशी आर्थिक और सामाजिक विकास जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए विशेष ध्यान दिया गया है। महिलाओं में जन्मजात नेतृत्व गुण समाज के लिए संपत्ति हैं। प्रसिद्ध अमेरिकी धार्मिक नेता ब्रिघम यंग ने ठीक ही कहा है कि जब आप एक आदमी को शिक्षित करते हैं, तो आप एक आदमी को शिक्षित करते हैं। जब आप एक महिला को शिक्षित करते हैं तो आप एक पीढ़ी को शिक्षित करते हैं। स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के माध्यम से महिलाएँ हैं बल्कि हमारी अर्थव्यवस्था की मजबूती में को भी योगदान दे रही है। सरकार के निरन्तर लगातार आर्थिक सहयोग से आत्मनिर्भर भारत के संकल्प में उनकी भागीदारी दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। पिछले 6-7 वर्षों में महिला स्वयं सहायता समूहों का अधियान और तेज हुआ है। आज देश भर में 70 लाख स्वयं सहायता समूह हैं। महिलाओं के पराक्रम को समझने की जरूरत है, जो हमें महिला की अधिक ऊंचाइयों तक पहुँचाएगी। आइए हम उन्हें आगे बढ़ने और फलने-फूलने में मदद करें। महिलाओं के सर्वांगीण सशक्तिकरण के लिए ह्याअमृत कालह इन्हें समर्पित हो। युवा भारतीय महिलाओं की उभरती आकांक्षाएँ भारत के सामाजिक तानेबाने को उत्तरोत्तर रूप से परिभाषित कर रही हैं, एक ऐसे समाज को बढ़ावा दे रही हैं जहाँ लैंगिक समानता और महिलाओं की एजेंसी आदर्श बन गई है। सहायक नीतियों को सुनिश्चित करने से इस बदलाव में तेजी आ सकती है, जिससे समावेशी

यहां सरकार प्रदेश में धार्मिक टूरिज्म की संभावनाओं के अलावा, माइनिंग, आईटी, एनर्जी, फार्मास्युटिकल, ऑटोमोबाइल जैसे तमाम सेक्टरों पर प्रेजेटेशन देगी और उद्योगपतियों से

निवेश को लेकर घर्या की जाएगी। उनका कहना है कि विपक्ष सकारात्मक भूमिका निभा और अपने इन्वेस्टर्स को लेकर आए। आगामी 7 दिसंबर को नर्मदापुरम ने सभाग स्तरीय इंडस्ट्री कॉन्वलेव होगी। इस कॉन्वलेव में सभी सेक्टर्स के उद्योगपतियों को आमंत्रित किया गया है। जिससे आईटी, हेल्थ, एजुकेशन, टूरिज्म, भारी उद्योग, एमएसएमई, लघु कुटी उद्योग से जुड़े लोग शामिल होंगे। सभी के प्रयासों और उद्योग धंधों के माध्यम से राज्य ते लोगों के लिए अधिक से अधिक रोजगार के अवसर सृजित करने की कोशिशें की जा रही हैं।



लेखक

डॉ. मोहन यादव जोर शोर से जुटे हुए हैं। इसके लिए उन्होंने वर्ष 2025 को उद्योग वर्ष के रूप में मनाने का निर्णय भी ले लिया है। विगत आठ माह से वे मध्यप्रदेश में निरंतर औद्योगिक निवेश को बढ़ाने के लिए प्रयासरत हैं। प्रदेश में उद्योगों की स्थापना के लिए वे ग्लोबल समिट और रीजनल कांक्लेव भी करा चुके हैं। तीसरा ग्लोबल समिट मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में 7 एवं 8 फरवरी को होना है। इसके पूर्व निवेशकों को आमंत्रित करने के लिए मुख्यमंत्री 24 नवम्बर को एक सप्ताह के लिए यूरोप जा रहे हैं। वे इंग्लैण्ड एवं जर्मनी में विदेशी निवेशकों के साथ-साथ भारतीय निवेशकों को भी मध्यप्रदेश में निवेश करने के लिए प्रेरित करेंगे। प्रदेश में पर्टन, शिक्षा, स्वास्थ्य, इंफॉर्मेशन टेक्नालॉजी के साथ ही लघु एवं मध्यम कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देने की कोशिशें की जा रही हैं। इसके लिए उन्होंने वर्ष 2025 को उद्योग वर्ष के रूप में मनाने का निर्णय भी ले लिया है। विगत आठ माह से वे मध्यप्रदेश के लिए प्रयासरत हैं। प्रदेश के बड़े जिलों से लेकर सागर और रीवा जैसे छोटे-छोटे जिलों में रीजनल इंडस्ट्री कांक्लेव आयोजित किए जा रहे हैं। जिनमें छोटे-बड़े अनेक उद्योगपतियों को आमंत्रित किया जाता है। सिंगल विंडो सिस्टम, कस्टमाइज पैकेज, निवेश प्रोत्साहन जैसी सुविधाओं से उद्योगपतियों को मध्यप्रदेश की ओर आकर्षित करने के प्रयास किए जा रहे हैं तो नए निवेशकों को भी प्रदेश में निवेश करने के लिए सरल और सुगम उद्योग मित्र नीतियां बनायी गयी हैं। सरकार प्रदेश के हर एक जिले में इन्वेस्टमेंट फैसिलिटेशन सेंटर स्थापित कर चुकी है। हर जिले के कलेक्टर को उद्योगों को प्रोत्साहन देने के लिए नोडल अधिकारी बनाया गया है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का कहना है कि प्रदेश में निरंतर नवा दिसम्बर में नर्मदापुरम और शहडोह में भी संभाग स्तरीय कॉन्क्लेव वाला आयोजन होगा। फरवरी माह में भोपाल में ग्लोबल इन्वेस्टर समिट आयोजित होगी। जिसमें इंग्लैण्ड और जर्मनी निवेशकों को आमंत्रित किया जाएगा। ग्लोबल समिट के पूर्व हर सप्ताह रीजनल कांक्लेव का आयोजित किया जा रहा है। इन कॉन्क्लेवों वाले फलस्वरूप प्रदेश में बड़े पैमाने पर निवेश आ रहा है। कम्पनियां बड़े पैमाने पर रोजगार देने को तैयार हैं। आईपार्क, एमएसएमई, हेवी इन्डस्ट्री एवं एनर्जी सहित अन्य सेक्टर्स में लगभग तीन लाख करोड़ रुपए का इन्वेस्टमेंट आ रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव व कहना है कि हमारा उद्देश्य रोजगार परक उद्योगों की स्थापना करना जिससे लोगों को अधिक से अधिक रोजगार मिल सके। इस सिलसिले इंग्लैण्ड और जर्मनी की उनकी यात्रा

करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अपने इस अधियान में विपक्ष को भी आमंत्रित किया है। उनका कहना है कि विपक्ष सकारात्मक भूमिका निभाए और अपने इन्वेस्टर्स को लोकर आए। आगामी 7 दिसंबर को नर्मदापुरम में सभाग स्तरीय इंडस्ट्री कॉन्क्लेव होगी। इस कॉन्क्लेव में सभी सेक्टर्स के उद्योगपतियों को आमंत्रित किया गया है। जिससे आईटी, हेल्थ, एजुकेशन, ट्रॉजम, भारी उद्योग, एमएसएमई, लघु कुटीर उद्योग से जुड़े लोग शामिल होंगे। सभी के प्रयासों और उद्योग धंधों के माध्यम से राज्य के लोगों के लिए अधिक से अधिक रोजगार के अवसर सृजित करने की कोशिशें की जा रही हैं। राज्य सरकार के इन प्रयासों के सकारात्मक परिणाम प्राप्त हो रहे हैं। रोजगार के बेहतर अवसर किसी भी प्रदेश की खुशहाली तभी संभव है जब वहाँ रहने को रोजगार के बेहतर अवसर मिलें, युवाओं को अपनी बौद्धिक क्षमता के अनुरूप स्थानीय स्तर पर काम मिलें, उन्हें रोजगार के लिए बाहर नहीं जाना पड़े। इस दिशा में सरकार के ये प्रयास निस्संदेह दिखाई तो दे ही रहे हैं। निवेशकों के लिये सरल नीतियां मध्यप्रदेश सरकार ने उद्योग क्षेत्र के लिये वर्ष 2024-25 में 4 हजार 190 करोड़ रुपए का प्रावधान रखा है। औद्योगिक निवेश को प्रोत्साहन देने के लिये प्रदेश में सिंगल विंडो सिस्टम, निवेश प्रोत्साहन और कस्टमाइज पैकेज जैसी सुविधाएं प्रदान करने की घोषणाएं भी की गई हैं। नये निवेशकों के लिए भी सरल और सुगम निवेश प्रक्रिया सुनिश्चित करने की बात की जा रही है। मध्यप्रदेश में विदेशी निवेशकों को लूभाने के लिए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जर्मनी और लंदन जाने वाले हैं। अपनी यात्रा के दौरान मुख्यमंत्री विदेशी उद्योगपतियों से मध्यप्रदेश में निवेश की संभावनाओं को लेकर चर्चा करेंगे तथा उन्हें फरवरी में होने वाली इन्वेस्टर्स समिट में आमंत्रित करेंगे। यहाँ मुख्यमंत्री फ्रेंड्स और एमपी के प्रतिनिधियों से भी मिलेंगे।

# इन्होंने कौन से विवरण दिए?

अपशिष्ट प्रबंधन की कमी के कारण यहां बीमारियां आम हैं, खासकर यहां के बच्चे, किशोरियां और बुजुर्गों बाहर से भी लोग आते हैं। इसी कारण इस बस्ती को रावण मंडी के रूप में पहचान मिली है। विजयदशमी में कुपोषण का शिकार नजर आते हैं तो वहाँ अन्य लोग विभिन्न प्रकार की बीमारियों का शिकार हैं। किसी प्रकार

एक और पक्ष भी है जिसे काफी हद तक नजरअंदाज कर दिया जाता है। यह पहलू है शहर की स्लम बस्तियाँ, जहां हजारों लोग जीवन की बुनियादी सुविधाओं के बिना जीवन गुजारते हैं। यह इलाका किसी दूसरी दुनिया की तस्वीर प्रस्तुत करता है। संकरी गलियाँ, कूड़े के घेर, टूटी सड़क, सड़क पर बहता घर और नाली का पानी और पीने के साफ पानी की कमी इन इलाकों की आम बात होती है। यहां के लोग न केवल गरीबी बल्कि जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं से भी विचित होते हैं। इनकी मुख्य समस्या यह है कि इन बस्तियों में साफ-सफाई नहीं उपलब्ध है और जल संकट व्यापक है। इससे सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। जयपुर में ऐसी ही एक स्लम बस्ती रावण मंडी है। राज्य सचिवालय से करीब 12 किमी दूर स्थित इस बस्ती में 40 से 50 ज्यागियां आबाद हैं। जिसमें लगभग 300 लोग रहते हैं। इस स्लम बस्ती में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति समुदायों की बहुलता है। जिसमें जागी, कालबेलाया और मिरासी समुदाय प्रमुख रूप से शामिल हैं। प्रति वर्ष विजयदशमी के अवसर पर रावण दहन के लिए यहां 3 फीट से लेकर 30 फीट तक के रावण, मेघनाद और कुर्भकरण के पुतले तैयार किए जाते हैं। जिसे जनरने के लिए ज्ञापा देते

का पहचान पत्र नहीं होन के कारण बीमारी के दौरान इन्हे पूरी तरह से स्वास्थ्य सुविधाएं भी नहीं मिल पाती हैं। इस संबंध में बस्ती की 38 वर्षीय शासित देवी बताती हैं कि उनका परिवार कालबेलिया समुदाय से है। जिसे घुमंतू और खानाबदेश जनजाति के रूप चिन्हित किया जाता है। घुमंतू होने के कारण उनका कोई स्थाई ठिकाना नहीं होता था। ऐसे में उन लोगों का कभी कोई प्रमाण पत्र नहीं बन सका है। हालांकि अब वह लोग पिछले 8 वर्षों से रावण मंडी में रह रहे हैं, इसके बावजूद अब तक उनका या उनके परिवार में किसी का स्थाई निवास प्राप्त नहीं बना सका है। उनके कर लोटा दिया जाता है कि उनका कोई रिकॉर्ड उपलब्ध नहीं है। ऐसे में उन्हें निजी अस्पताल में जाने को कहा जाता है। जहां इलाज काफी महंगा होता है। ऐसे में अक्सर वह लोग बस्ती में आने वाले डॉक्टर से देसी इलाज करते हैं। हालांकि उन्हें नहीं पता कि उसके पास डॉक्टर की मान्यता प्राप्त डिग्री है भी या नहीं? वहीं 42 वर्षीय राजा राम जोगी कहते हैं कि इस बस्ती में पीने का साफ पानी उपलब्ध नहीं है। पास में एक सरकारी नल से पानी भरते हैं लेकिन अक्सर उन्हें बहां से पानी नहीं मिल पाता है। ऐसे में बस्ती के कुछ परिवार आपस में चंदा इकट्ठा करते हैं ताकि सातांत्रिकी वर्तमान से बच सकता है।











